आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026
Received: 09/06/2026; Accepted: 20/06/2026; Published: 28/06/2026

*पुस्तक समीक्षा*

# डॉ. के.वी उमाशंकर (शव) जी का कुरुक्षेत्र

**Dr. Naziraunisa S**
Asst. Prof. & HOD of Hindi,
S.J.M. College of Arts, Science & Commerce,
Chitradurga

**Dr. Naziraunisa S, डॉ. के.वी उमाशंकर (शव) जी का कुरुक्षेत्र**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(296-302)

https://doi.org/10.5281/zenodo.21444133

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

डॉ. के.वी उमाशंकर (शव) जी एक उदयोन्मुख कवि हैं जो अहिन्दी प्रदेश के होते हुए भी हिन्दी साहित्य की उसमें भी विशिष्ट लम्बी चित्रात्मक कविताओं के लिए जाने जाते हैं। इनका जन्म 1972 में कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिला में एक मध्यवर्गीय सम्पन्न परिवार में हुआ। करीब 32 साल से ये हिन्दी के अध्ययन - अध्यापन में रत हैं।

इनकी अब तक पाँच काव्य रचनाएँ प्रकाशित हुए हैं। पहली पुस्तक 'संघर्ष' जो उन्चालीस फुटकल कविताओं का संग्रह है। दूसरी 'मैं और मेरी कविताएँ' एक साझा संकलन हैं जिसमें अलग अलग प्रदेश के दस कवियों की कविताओं का संकलन प्रकाशित हुआ है। इनकी तीसरी रचना 'कुरुक्षेत्र' है जिसके बारे में विषद रूप

से आगे चर्चा की जाएगी। इनकी चौथी रचना 'पांचाली' खण्डकाव्य है। इनकी पांचवीं रचना 'रावणायण-दृष निश्चय की रात' है, जो लगता है 'नरेश मेहता' के 'संशय की एक रात' के मुकाबले में लिखा गया हो।

इनके काव्य का विषय अधिकतर पौराणिक है जो अतीत के सहारे वर्तमान की समस्याओं का समाधान खोजने की कोशीश कर रहे हैं। इनका 'कुरुक्षेत्र' 2022 में दीक्षा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इसे पढने के बाद हमें लगता है कि कवि महाभारत के पात्रों से कितना प्रभावित है और उनको वह आज भी जी रहा है जिनके सहारे वर्तमान के संघर्षमय जीवन को जीतना चाहता है।

काव्य पुस्तक के मुखपृष्ट में ही अंकित है कि यह एक ' स्वगत गीती नाट्य' है। कवि इसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में भाग लेनेवाले और सारे प्रमुख पात्रों की मनोदशा का चित्रण बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। काव्य पुस्तक में कवि सिर्फ गद्य रूप में भूमिका नहीं लिखवाया है काव्य रूप में भी भूमिका लिखी है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि कुरुक्षेत्र क्यों लिखना पडा ? उनके अपने हृदय की बातों को 'हर मन एक कुरुक्षेत्र' के शीर्षक में अंकन करते हैं।

इसमें 'भूमिका' शीर्षक कविता में कवि काव्य रूप में ही स्पष्ट करते हैं कि उन्हें यह काव्य पुस्तक क्यों लिखना पड़ा। कोरोना के भयानक दृश्य कविमन को हिला दिया और शवों का ढेर उन्हें कुरुक्षेत्र की याद दिलाई। कुरुक्षेत्र महायुद्ध में ऐसे ही शवों का ढेर था शायद, जो आज कोरोना के कारण है। कोरोना के ताण्डव से ग्रस्त कवि मन इस तरह पुकार उठता है –

" शवों का ढेर देख ये 'शव' (मैं) भी,
सिहर उठा, विचलित रहा।
उसका मन चिल्ला उठा,
' हे ! मायावी,
बहुत हो गई गीता में बखान तेरी,
अब तो अपनी वादा पूरी कर ले !
तेरा अर्जुन फँसा है,
कोरोना के चक्रव्यूह में।
न भूल भक्त है तो भगवान है,
वरना तेरा यहाँ क्या वजूद है॥ " [1]

आँखों देखी स्थिति का वर्णन कवि इन पंक्तियों में मार्मिक ढंग से चित्रण करते हैं –

" सभी ओर,
कुरुक्षेत्र का ही हाहाकार,

अपनों की गलतियों को,
नजरंदाज करते धृतराष्ट्र बन ।
परायों की गलती देखते ही,
बन जाते भीम या अर्जुन ॥ " [2]

इसकी पहली कविता 'कुरुक्षेत्र' में उस जगह का मानवीकरण किया गया है । स्वयं 'कुरुक्षेत्र' अपनी कहानी बताता है कि उसका नाम 'कुरुक्षेत्र' क्यों पड़ा । पाण्डवों का पूर्वज 'कुरु' जिसके कारण कौरव नाम भी उनकी आगे की पीढ़ी को कहा जाता है, उस कुरु राज को एक श्राप था । सूर्यास्त होते ही मरण प्राप्त करना और सूर्योदय के साथ जीवित होना । यह कहानी आज के रोज मर्रा जीवन को दर्शाती है। थका हारा आज का मानव भी सूर्यास्त के साथ ऐसी गहरी नींद सोता है कि शायद वह मर ही गया हो । और अगले दिन सूर्योदय के साथ फिर नव ऊर्जा से संघर्ष करने उठता है । कुरु एक बार शिकार करते करते इस जगह पर पहुंचते हैं जिसका नाम उन्हीं के कारण आज कुरुक्षेत्र कहा जाता है । इस स्थान पर पहुंचने के बाद सूर्यास्त होने पर भी उनकी मृत्यु नहीं होती । क्योंकि वह स्थान पहले से ही ऋषिमुनियों के तपोबल से ओतप्रोत था । इससे वे आश्चर्यचकित होते हैं और सोचते हैं कि अगर मैं यहाँ खेती करूँ और उस अनाज का भक्षण करुँ तो इस रोजमर्रा श्राप से मुक्त हो सकता हूँ । उन्होंने शिव से नंदी और यमराज से भैंसे को तपस्या करके लेते हैं और उन पर हल जोतकर खेती करते हैं । इस कारण इस जगह का नाम 'कुरुक्षेत्र' पड़ा याने 'कुरु का क्षेत्र' । संस्कृत में खेत को 'क्षेत्र' कहा जाता है । इसके कई बरस बाद कृष्ण कुरुक्षेत्र के पास आकर उसके आंगन में युद्ध कराने की अनुमति मांगते हैं क्योंकि कुरुक्षेत्र एक महान तीर्थ स्थल है जिसमें मरने वाले सीधे स्वर्ग पहुंच जाते हैं । इसी कारण उस युद्ध को कुरुक्षेत्र में कराया गया । लेकिन कुरुक्षेत्र कृष्ण को अनुमति तभी देता है जब वह उसे वरदान देता है कि कुरुक्षेत्र के पास आनेवाले सभी का मन वह खुली किताब की तरह पढ सकता है समय आने पर वह इस मानसिक दशा को किसी साहित्यकार के सामने उजागर कर सकता है ।

" बीता यह युग,
ताकता रहा, परखता रहा ।
इस नए कलियुग में,
आया एक,
चलता फिरता 'शव' । (कवि)
याद कराया, हरा किया,
मेरे सारे पुराने घाव ।
वो बना मेरा 'गणेस',
बना मैं उसका व्यास ॥ [3]

इन पंक्तियों में महाभारत गणेश जी ने लिखा व्यास जी के कहने पर । इस कथा को भी सूक्ष्म ढंग से बताया गया है ।

इस रचना की दूसरी कविता 'सर्वनाश की पिछली रात' में अगले दिन के युद्ध में आमने सामने होनेवाले सारे प्रमुख योद्धा दुर्योधन, भीष्म, कर्ण, कृष्णार्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, द्रौपदी के मनोदशा का चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। अंत में कुरुक्षेत्र अपनी स्थिति का वर्णन इन शब्दों में करता है –

" इन सबकी तैयारी से,
यह तो है निश्चित,
अगले कुछ दिन मैं,
न सो पाऊँगा निश्चिंत ॥ " [4]

तीसरी कविता 'शिकंजा शिखण्डी का' में भीष्म की मृत्यु का कारण बननेवाले शिखण्डी की मानसिकता का चित्रण मिलता है । शिखण्डी की आखिरी पंक्तियां बहुत ही मार्मिक हैं –

" भविष्य में हर मानव,
अपनी समस्या हरने,
जब भी इतिहास में झाँकेगा,
समाधान तो जरूर पाएगा ।
पर धर्माधर्म की कसौटी पर,
कृष्ण खरा न उतरेगा ॥ " [5]

इस रचना की पांचवीं कविता 'बलि का बकरा' में अभिमन्यू की करुणा जनक हत्या का वर्णन है । इस कविता में कन्नड के महान कवि रन्न के 'साहस भीम विजयं (गदायुद्ध) का झलक मिलता है । दुर्योधन भी अभिमन्यू की मृत्यु पर रोता है ।

" दुर्योधन दुख में बड़बड़ा रहा,
' हाय! धिक्कार! मेरे हठ को,
जो तुझे मार गिराया ।
तेरे बारे में सुना तो बहुत था मैंने,
तरस रहा था मन तुम्हें देखने ।
पर आज,
इस स्थिति में देख लज्जित हूँ स्वयं,
वापिस करो मेरे अभिमन्यु को,

हे! निर्दय यम ॥ " [6]

कुरुक्षेत्र रचना की पांचवीं कविता का शीर्षक 'बिल्ली चली चूहा चबाने' हिन्दी बाल कविता 'बिल्ली चली प्रयाग नहाने' पर रखा गया है। इसमें मैथिली शरण गुप्त के खण्ड काव्य 'जयद्रथ वध' की कथा को कवि ने अपनी शैली में व्यक्त किया है। अपने बेटे की हत्या का बदला अर्जुन जयद्रथ से लेता है। वह बिल्ली है और जो छिपकर रहता है सूर्यास्त तक ताकि अर्जुन अपने शपथ के अनुसार अग्निप्रवेश करे, वह जयद्रथ चूहा है। कविता के अंत में ये पंक्तियाँ बहुत ही आकर्षक हैं –

" सुनी थी मैंने यह कहानी,
बिल्ली चली प्रयाग नहाने !
पर आज आँखों देखा,
'बिल्ली चली चूहा चबाने'
और चबा ली भी ।। " [7]

कुरुक्षेत्र रचना की पांचवीं कविता का शीर्षक 'चींटियों से हाथी की हत्या' में घटोत्कच की हत्या का वर्णन हत्या करनेवाले कर्ण के मन मंथन के द्वार मोहक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

वैसे ही छटवीं कविता 'कुरुक्षेत्र का कुत्ता' कविता में गुरु द्रोण की हत्या का वर्णन है। साथ में द्रोण से संबंधित एक लोक कथा को भी काव्य रूप दिया गया है।

सबसे मर्मस्पर्शी सातवीं कविता 'अनाथ के प्राण हुए अनाथ' में कर्ण की जीवनी और मौत का वर्णन किया गया है। इसमें कुंती द्वारा कर्ण का चित्रण किया गया है जो विशेष प्रतीत होता है।

रचना की आठवीं कविता 'सनेत्र अंधी की आशा' में गांधारी की मानसिकता और 99 पुत्रों को खोने के बाद उसकी मन: स्थिति और अपने आखिरी बेटे दुर्योधन को बचाने का असफल प्रायास का वर्णन किया गया है। गाँधारी अपने आंखों की शक्ति से दुर्योधन को एक बार अपनी पट्टी खोलकर उसे वज्रदेही बनाकर अजेय बनाना चाहती है लेकिन कृष्ण के कारण वह भी असफल होता है।

कुरुक्षेत्र की दसवीं कविता 'सर्वनाश की अंतिम रात' में दुर्योधन की अंतिम दशा का वर्णन सुंदर रूप से किया गया है । यह भास कवि के 'ऊरुभंगम' की याद दिलाता है । इसमें दुर्योधन की हारने के बाद की मानसिकता का वर्णन सुंदर रूप से किया गया है। कन्नड में एक कहावत है – अंतू इंतू कुन्ती मक्कळीगे राज्य इल्ला' अर्थात जैसे तैसे कुन्ती पुत्रों को राज्य नहीं मिला। इसका विश्लेषण भी इसमें किया गया है। दुर्योधन कहता है –

" विधवा व बूढों का राज्य,
लेकर क्या करेगा राज ?

हरा भरा हस्तिनापुर था मेरा,

जब मैं था उसका युवराज ॥ " [8]

इसी कविता में अश्वत्थामा द्वारा छोटे पाण्डवों की हत्या और उसका श्राप का भी जिक्र किया गया है। दुर्योधन अपने अंतिम शब्दों में पश्चात्ताप की ध्वनी मुखरित है।

इस रचना की अंतिम कविता है 'शर-शय्या', जिसमें भीष्म अपनी अंतिम घडियों में जो सोचता है उसका बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है। कवि दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' की भी झलक इसमें मिलती है। रचना का अंत भी भीष्म के इन शब्दों से किया गया है जो बहुत ही मार्मिक हैं और पाठक को बंधे रखते हैं –

" यह शर-शय्या',

सिर्फ मेरी नहीं है।

यह हर उस मानव की है जो,

कुछ करना तो चाहता,

पर कर नहीं सकता।

रातभर चुभन महसूस करता।

सो नहीं पाता मुझ जैसा।

अपनी असफलता कि आग में,

जलता रहता।

तो सिर्फ मेरी नहीं है यह,

' शर-शय्या ' ॥ [9]

इस तरह कोरोना के परिवेश में पौराणिक कथा पर आधारित यह 'कुरुक्षेत्र' बहुत ही रोचक, रोमांचक, पठनीय, स्मरणीय है जिसे कवि ने अपनी लेखनी से इसे साकार किया है। इसमें चर्चित कई विषय हमें सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। हम आज भी इसके कई उदाहरण होने के बावजूद सुधर नहीं सके, संभल नहीं सके यही शोचनीय बात है ऐसा महसूस होता है हमें।

**संदर्भ :**

1. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 14
2. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 15
3. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 23
4. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 29
5. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 34

6. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 38

7. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 47

8. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 79

9. कुरुक्षेत्र : डॉ. के.वी उमाशंकर : पृष्ठ : 91

**********